International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 717-719

कबीरदास का वर्तमान समय में प्रासंगिकता की समीक्षा

जयन्त कुमार बोरो
अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कोकराझार गवर्मेन्ट कॉलेज, कोकराझार, असम, भारत।

सारांश
कबीर अपने समय के एक ऐसे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति है जिन्होंने अपने को सदैव काल सम्पृक्त बनाये रखा। अपने युग के समाजशास्त्री के रुप में उन्होंने अपनी प्रतिभा को प्रकाशित करवाया। वर्तमान समय भी कबीर की विचारधारा पर चिन्तन कर सकता है कि उनके द्वारा अभिव्यक्त वाणी हमारे लिए नई समाजिक चेतना को जागृत करवता हैं। कबीर भावना पर नहीं विचारों पर जीने वाले व्यक्ति थे। तत्कालीन समाज के निम्न वर्ग के लोग जिसे शूद्र जैसे शब्दों से सम्बोधित किया गया। उन्हें भी समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए अनवरत प्रयास किया। कबीर की प्रासंगिकता आज के सन्दर्भ में नैतिकता पर अधिक बल प्रदान करता है। आज के वैज्ञानिक युग में मनुष्य को और अधिक विचारशील, चिन्तन शील होना चाहिए, न कि भावनाओं के आवेश में आकर निर्णय लेने वाला होना चाहिए।

कूट शब्द : सम्पृक्त, विचार, शूद्र, वैज्ञानिक, नैतिकता आदि

प्रस्तावना
कबीर ने अपने समय को जिस दृष्टि से देखने का प्रयास किया। उसकी आवश्यकता ही वर्तमान समय में उनकी प्रासंगिकता को स्थापित करता है। उनके सन्दर्भ में प्रायः यह कहा जाता है कि वे एक विचारशील और समाज प्रिय व्यक्ति थे। उन्होंने समाज में व्याप्त विसंगतियों और व्यवस्था की गहरी खाई को करीब से देखा और भोगा भी। उनका साहित्य ही उनके भोगे हुये यथार्थ का एक सर्वोपरि उदाहरण है। कबीर अमर है। कबीर को समाज के सभी वर्गों तक पहुँचाने की आवश्यकता हैं। कबीर एक व्यक्ति होकर भी एक विचार है जो अच्छी समाज व्यवस्था में अपनी भूमिका को निर्वहन करता हैं। कबीर का परिचय वर्तमान समय को कराना अति आवश्यकत है कारण वे एक समाज-सुधारक के साथ अच्छे भविष्य निर्माता भी रहे हैं। उनकी प्राथमिकता सामाजिक विषमता और उसके गिरावट को दूर करने के साथ आध्यात्मिकता को भी समाज में प्रतिष्ठत करना था।

अध्ययन का उद्देश्य
कबीर एक विचारशील संत रहे है। जिनके विचार हमारे नये युग के लिए काफी महत्वपूर्ण हैं। नैतिक के अभाव में सच्चाई को समझ पाना कठिन है। सच को देख उसे अनुभव कर पाना कबीर की विचार शीलता को प्रमाणित करता है। कबीर के विचारों को समाज में सम्प्रेषित किये समाज में एकता स्थापित कर पाना असम्भव है।

शोध सामाग्री
प्रस्तुत आलेख की शोध सामाग्री विविध प्रकार के लेखों और साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त किया गया गया है। वर्तनान विसंगति से साथ-साथ कबीर से सम्बन्धित पुस्तक, प्रबन्ध, आलेख आदि को आधार स्परुप ग्रहन किया गया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी के कबीर पर लिखे ग्रन्थ से काफी मात्रा में आवश्यक सामाग्री प्राप्त हुआ हैं।

शोध विधि
प्रस्तुत लेख की विषय वस्तु के अध्ययन के लिए विशलेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है तथा यह विषय समीक्षात्मकता पद्धति की भी मांग रखता है।

अध्ययन का विशलेषण
कबीर के विषय में जितना कहा जाये उनता कम हैं। आज हमारे समाज की जो रुप एवं व्यवस्था विद्यमान हैं उसके विषय में कबीर सालो पहले अवगत थे। उनकी कविता आज भी प्रासंगिक है, कारण यही है कि उन्होंने सामाजिक कुरीतियों और पाखंड के खिलाफ अपने आवाज़ को बुलंद किया। लोगो ने यहाँ तक यह अनुभव किया कि उनकी अभिव्यक्ति अभ्रद्र और फूहड़ हैं। कबीर के पदों में इनते गूढ़ अर्थ समाहित है जिसका अनुमान उनके अर्थ बोध से हो जाता हैं। मध्यकालीन संत कवि कबीर का विशलेषण सच्चे अर्थों में भक्त रुपी समाज सुधारक या समाज सुधारक रुपी भक्त दोनों ही रुपों में किया जा सकता हैं।

कबीर ने प्रतिभा के द्वारा हमारी समाज व्यवस्था को एक नयी दिशा देने का प्रयास किया। कबीर जिसे कई लोग निर्गुण संत कवि, युग द्रष्टा, युग प्रणेता आदि कई विविध विशेषणों से सुसज्जित करते है। लेकिन हमारी समाज व्यवस्था के अच्छे समाजशास्ज्त्री थे – कबीर। कबीर का मानना है कि समाज के चाल-ढाल को बदले बिना एक अच्छे का निर्माण नहीं हो सकता। आप स्वयं देख सकते है कि आज की वर्तमान भारतीय समाज की दशा किस प्रकार की है? समाज की वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था एवं धर्म की व्यवस्था ने हमारी विचारधाराओं को कई रुपों में प्रभावित करने का प्रयास किया है। तत्कालीन समाज व्यवस्था ने हमारी मानसिक वृत्ति को और भी अधिक दूषित कर दिया।

कबीर ने अपने पदों में सामाजिक परिष्कार की ऐसी बातों को उल्लेख किया है जिसे लेकर हम एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकते है। कबीर ने यही कहाँ है कि भगवान को जितना बाटने का प्रयास किया जाएगा उतना ही समाज विखंडित होता जाएगा। उन्होंने कहाँ है कि –

हम तो एक एक करि जांनां।
दोह कहै तिनही कौ दोगज जिन नाहिन पहिचांनां॥ [1]

हमारी जाति, धर्म, सम्प्रदाय व्यवस्था के कारण ईश्वर विभक्त हो गये हैं। हम आज के समय में ईश्वर को विविध नामों में बाट कर अपनी अज्ञानता को ही प्रदर्शित करते हैं। ईश्वर को राम, रहीम, परमात्मा, अल्लाह, खुदा कहो कोई फर्क नहीं पड़ता। उन्होंने

संसार के समस्त वस्तुओं में पंच तत्वों (जल, अग्नि, वायु, धरती, आकाश) को सभी के लिए एक समान बनाया हैं। कबीर कहते है कि –

एकै पवन एक ही पानी, एकै जोति समांनां।
एकै खाक गढ़े सब भाढ़ै एक कोहरा सांना।। [2]

उन्होंने हमेशा इस विश्वास पर अधिक बल दिया कि संसार में मानवता से बड़ा और कोई धर्म नहीं है। भगवान ने सभी वस्तुओं को सभी प्राणियों में एक समान विभक्त किया हैं। चाहे वह पानी, पवन, प्रकाश, हो यहाँ की सभी मनुष्यों के आकार-प्रकार को भी एक समान बनाया हैं। इसी बात से हमें यह समझ लेना आवश्यक है कि समस्त संसार में यह मनुष्य दिखने में तो एक से है, सम्भवतः उन्हें बनाने वाला भी तो एक ही होगा। भगवान को विविध नामों एवं प्रकारों में उल्लेख करना अंधविश्वास कहलाता है। कबीर ने यह कहाँ है कि संसार में विविध रुपों में ईश्वर का रुप विद्यमान हैं। हमें सिर्फ उसे खोजने की आवश्यकता हैं। संसार के वृक्षों की सभी लकड़ियों में अग्नि छिपा हुआ है और बढ़ई सिर्फ लकड़ी को ही काट सकता है लेकिन वास्तव में लकड़ी में छिपे अग्नि को कोई काट नहीं सकता। इससे यहीं स्पष्ट हो जाता है कि सभी धर्मों की बुनियाद एकता है एकता में ही सबसें अधिक विश्वास होना चाहिए और उसमें ही सबसे अधिक बल भी है। कबीर ने भगवान के स्वरुप को 'सब घटि अंतरि तूँही व्यापक धरै स्वरुपे सोई' कहकर सरल रुप में स्पष्ट करने का प्रयास किया हैं। कबीर ने इस बात पर विशेष रुप से जोड़ दिया है कि परमात्मा सभी के लिए समान अधिकार की बात करता है। हमें उसकी अच्छाई को लेकर आगे बढ़ना चाहिए। कबीर ने यह भी उल्लेख किया है कि संसार माया का घर है। इस जगत विविध प्रकार के वस्तुएँ समय समय पर हमें आकर्षित करते रहते हैं। यह स्पष्ट है कि वस्तुओं में आकर्षण तो रहता हैं लेकिन आकर्षण जीवन का शाश्वत धर्म नहीं हैं। हमें सच्चाई और वस्तु के प्रयोग की सार्थकता पर विचार करते हुयें वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए। कबीर ने अत्यधिक भौतिक सुख की कामना को ही माया के रुप में वर्णित किया हैं और इसी में पड़ कर हम अपने जीवन का समूल नाश करते चलते है। धन जीवन के लिए एक आवश्यक तत्व हैं लेकिन धन के उपार्जन के लिए अन्याय का मार्ग अपना ला ही अधर्म है। कबीर कहते है कि—

'माया देखि के जगत लुभांनां काहे रे नर गरबाना।' [3]

वर्तमान समय अपने को जितना ही प्रगतिशील कहे, वह उतना ही अंधविश्वासी, रुढ़िवादी, षड्यंत्र प्रिय है। समस्त संसार विकासवाद को सम्मान देता है। संसार का विकास पथ अग्रसर होगा तो मानवता की ही कल्याण होगा। लेकिन क्या हमारा विकास प्रगतिशील हैं? प्रगतिशील होने का अभिप्राय तो यही होना चाहिए कि इसमें किसी भी प्रकार के श्रेणी, जाति, सम्प्रदाय, धर्म हास्य रुप न हो बल्कि इन सबका विकसित रुप समाज के सम्मुख परिलक्षित हो चाहिए। कबीर ने सच्चे बन कर हमारे समाज को देखने का प्रयास किया है लेकिन उसे कई प्रकार की समस्याओं का सामना करन पड़ा। वे कहते है कि--

संतों देखत जग बौराना।
साँच कहौं मारन धावै, झुठे जग पतियाना।। [4]

संसार को हमेशा से ही सत्य वचन कटु वचन लगता है। इसीलिए सम्भवतः जितने जल्दी अन्याय को अपनाता है उतने ही जल्दी में सच्चाई को नहीं अपनाता। सच पर लोगो का विश्वास कम दिखाई देने लगा हैं। जीवन में अपना सपना पूरा करना अच्छी बात है लेकिन उसे नैतिकता के मार्ग पर चल कर पूरा करना और भी अच्छी बात है। हमारा धर्म आज कही अधिक जटिल बन चुका हैं। उसे हमारी अंधविश्वास और अज्ञानता ने अधिक षड्यंत्रकारी बना दिया हैं। धर्म के नाम हमें एक दूसरे से अलग कर दिया गया है। धर्म के आधार पर ही आज भी लोगो पर विचार किया जाता हैं कि कौन किस वर्ग का है ? इस प्रकार के ख्यालात हमारी प्रगति की शालिनता को बाधा पहुँचाती है। अधिक धर्म, व्रत आदि नियम पालन वाले के प्रति उनका अविश्वास प्रकट होता है कबीर कहते है –

नेमि देखा धरमी देखा, प्रात करै असनाना।
आतम मारि पखानहि पूजै, उनमें कछु नहिं ज्ञाना।। [5]

कबीर मानवतावाद के पक्षधर रहे है। उन्होंने जन जन तक मानवतावादी विचार धारा को पहुँचाने का प्रयास किया है। यहाँ तक की विविध प्रकार की उलटवासी रहस्यवादी भावना के तत्वों को समाज के लिए प्रयोग किया। कबीर का कहना है कि समाज में रहने वाले लोग धर्म के नाम पर विविध प्रकार के आचरण को अपनाते हैं और तरह-तरह के कर्मकांड, जैसे क्रिया कलापों को अपने जीवन में स्थान देते हैं। लेकिन वे लोग आत्मा के समस्त द्वारो को बन्द कर पत्थर रुप ईश्वर की पूजा करने लगते है। अर्थात् पत्थर में अगर ईश्वर है तो वह कितना कठोर होगा। हमें सच्चे अर्थों में पत्थर की पूजा किये बिना मानवता की पूजा करना चाहिए। ईश्वर पत्थर जैसा कठोर नहीं हैं। अपितु वह पुष्प से भी कोमल हैं। कबीर का सबसे बड़ा जीवन दर्शन समाज को सही रास्ते पर लाना था। जिसके लिए वह सच्चे गुरु की आवश्यतता पर जोर देते है। गुरु का कार्य ही अज्ञानता को दूर करना हैं। गुरु उसे ही कहाँ जा सकता है जो इरादो का पक्का हो, आदर्श हो, मानवता का सच्चा समर्थक हो। कबीर स्वयं अपने पदों के माध्यम से कहते है कि –

बहुतक देखा पीर औलिया, पढ़े कितेब कुराना।
कै मुरीद तदबीर बतोवे, उनमें उठै जो ज्ञाना।। [6]

कबीर का मानना है कि बहुत से गुरु समाज में अज्ञानता का ही प्रचार करते है। वास्तव में गुरु समाज में विसंगति के रुप व्याप्त अज्ञानता को दूर करे न कि उसका समर्थन करे। कबीर ने विचार व्यक्त किया है कि बहुत से ऐसे पीर, फकीर, औलिया अर्थात् हिन्दु और मुस्लमानों के धार्मिक गुरु है जो कहीं न कहीं अज्ञानता को अधिक विस्तार दे रहा है। लेकिन वे लोग हमारे धार्मिक ग्रंथों के अच्छे जानकार स्वयं को घोषित करते है पर वे ग्रंथों की मार्मिकता को समझे बिना ही अपने शिष्यों को उलटे सीधे ज्ञान देते फिरते है। गुरुओं की अज्ञानता से ही समाज में अंधकार को फैलने का अधिक अवसर मिला है। गुरुओं को चाहिए कि वह समाज में नेकि का प्रचार करे। लेकिन अज्ञानी को गुरु मान कर चलना हमारी विवशता हो चली है। वे चाहते है कि समाज में रोशनी फैले। यदि समाज को सुन्दर बनाना है तो अच्छे गुरुओं की भी आवश्यकता है।

कबीर को जिस रुप में भी ले लेकिन वे आज के समय के लिए एक विचार तुल्य है। कबीर की विचार धारा वर्तमान समय के लिए काफी आवश्यक है। उनकी विचार धारा आज के समाय के समाज को और अधिक परिष्कार करने के लिए काफी है। उनका मत था कि खुदा को विभक्त करना, अपने को वास्तव में खुदा से दूर रखना है। ईश्वर को खुदा, रहीम, भगवान जो भी कहों लेकिन उसे सम्प्रदायों और धर्मों के नाम पर अलग करना भगवान से हाथ धोना है।

उपसंहार

कबीर का जीवन दर्शन सच्चे अर्थों में समाज का सच्चा दर्शन कहाँ जा सकता है। दर्शन का अभिप्राय एकांत चिन्तन नहीं, बल्कि दर्शन तो वह है जो जीवन के प्रति अर्थवत्ता एवं मानवीय चिन्ता को अभिव्यक्त कराता है। वर्तमान 21वीं सदीं कबीर को समाज की विकास धारा के रुप में ग्रहण कर सकता है। मुनष्य का जीवन

क्षणभंगुर है वह किसी भी क्षण समाप्त हो सकता है। जीवन में आवश्यक है अच्छे विचार, अच्छे जीवन दर्शन, अच्छे ज्ञान की जो सबके लिए ग्रहण करने योग्य हो। समाज में एकता की स्थापना कर पाना, आज के समय के लिए काफी जटिल हो चुका है। सभ्यता की आढ़ में समाज जितना विकसित होता हुआ दिख रहा है वह उतना ही ओधोगति की ओर जा रहा है। जाति के नाम पर लड़ना नहीं बल्कि हमें जाति एवं समुदायों के मध्य प्रेम, आपसी भाई चारा, बन्धुत्व आदि को और अधिक स्थापित करना है।

पाद टीका

1. आरोह, भाग -1, कबीर (शीर्षक), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, (संस्करण-2006), पृष्ठ- 131
2. वही,
3. वही,
4. वही,
5. वही
6. वही

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कबीर, (संस्करण-2000), निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001.
2. स्नातक,डॉ. विजयेन्द्र, डॉ. रमेशचन्द्र मिश्र, सम्पादक, कबीर वचनामृत (संस्करण-2005), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2/35 अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002.
3. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, सम्पादक, कबीर (संस्करण-2006), प्रकाशक - राज कमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002.
4. चतुर्वेदी, रामस्वरुप, लेखक, हिन्दी काव्य का इतिहास (संस्करण- 2007), प्रकाशक- लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-01.